कंचन कामिनी कीर्ति

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कंचन का अर्थ है स्वर्ण, धन–दौलत आदि। कामिनी का अर्थ है–स्त्री, कीर्ति का अर्थ है–यश। ईश्वर ने इस सृष्टि में कोई भी वस्तु बुरी नहीं बनाई है। एक सीमा से अधिक हो जाने पर कोई भी वस्तु बुरी हो जाती है। कहा भी गया है कि **अति सर्वत्र वर्जयेत्** अर्थात् अति होना नुकसानदायक होता है। भौतिक पदार्थ जड़ है। जड़ का अर्थ निर्जीव वस्तु है। निर्जीव वस्तु का अपना कोई मूल्य नहीं रहता। जब चेतन के साथ उसका संयोग होता है तो उसका मूल्य बढ़ जाता है। जर, जोरू और जमीन के कारण ही विवाद होता है। स्वर्ण का मूल्य अधिक इसलिए होता है कि लोग उसको अधिक चाहते हैं। स्वर्ण आभूषण बनाने के काम में आता है। स्त्रियां आभूषण प्रिय होती हैं। स्वर्ण के प्रति उनमें स्वाभाविक लगाव होता है। अलंकरण शरीर की बाह्य शोभा को बढ़ाते हैं। दिखावट अधिक दिन तक नहीं चलती। जब वृद्धावस्था आती है तो सभी आभूषण भार स्वरूप लगने लगते हैं। बाहरी और आंतरिक दोनों सुन्दरताएं आवश्यक हैं। आभूषण शरीर की शोभा को बढ़ाता है तो धर्म या सत्य आत्मा का आभूषण है। धर्म से आत्मा की शोभा बढ़ती है। ज्ञान, ध्यान, योग और सत्कर्म मानव के आंतरिक आभूषण है। मानव की कीर्ति इन्हीं से चतुर्दिक फैलती है।

आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अतिसंग्रह है। मानव की मूलभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा, शिक्षा और चिकित्सा। इसकी पूर्ति सभी को करनी चाहिए। जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है।

अधिक धन की सुरक्षा करना भी कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊची कई अटालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अटलिकाएं है तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है। व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूली के समान प्रतीत होने लगते हैं। अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है। धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारें को लेकर भाईयों–भाईयों में कलह छिड़ जाती है। कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है।

अच्छाइयां गुणों का परिवार है और बुराइयां मोह का परिवार है। धन कुछ है सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए। परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है। चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है। सही तरीके से अर्जित किया गया धन परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा कर सकता है।

अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आजाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आजाना, सुनामी आजाना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है।

मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे हैं। उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है, जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दूभर हो जायेगा। सृष्टि की परम्परा बहुत ही जटिल

है। सृष्टि में जड़ और चेतन दो तत्वों के सहयोग से संतुलन बना हुआ है। जड़ और चेतन में जब मानव के द्वारा विकृति उत्पन्न की जाती है तो वे तत्व अपने स्वाभाविक रूप से विकृत हो जाते हैं। भारतीय जनमानस की सभी परम्पराएं यह स्वीकार करती हैं कि यह सृष्टि अनेक तत्वों से बनी हुई है।

कामिनी अर्थात स्त्री के अनेक स्वरूप हैं। जब वह बच्चों को शिक्षा देती है तो एक शिक्षक के रूप में उसका स्वरूप दिखाई देता है। परिवार के संचालन में उसका स्वरूप एक गृहिणी का रहता है। वैसे नारी तो लक्ष्मी का स्वरूप है। परिवार को नागरिकता की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। गृहस्थ धर्म चलाने के लिए स्वदार संतोष की व्यवस्था है। प्रत्येक व्यति यश या कीर्ति चाहता है। अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए उसे चरित्र निर्माण करना पड़ता है। यश की रक्षा करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य है।